International Journal of Sociology and Humanities

ISSN Print: 2664-8679
ISSN Online: 2664-8687
Impact Factor: RJIF 8.33
IJSH 2025; 7(2): 110-113
www.sociologyjournal.net
Received: 15-05-2025
Accepted: 17-06-2025

डॉ नेहा कुमारी जायसवाल
सहायक प्राध्यापक इतिहास विभाग महिला महाविद्यालय, समस्तीपुर ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ नेहा कुमारी जायसवाल
सहायक प्राध्यापक इतिहास विभाग महिला महाविद्यालय, समस्तीपुर ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

भारतीय राष्ट्रवाद का उदय एवं विकास (बिहार के संदर्भ में)

डॉ नेहा कुमारी जायसवाल

DOI: https://www.doi.org/10.33545/26648679.2025.v7.i2b.188

सारांश
भारतीय राष्ट्रवाद के उदय एवं विकास को आधुनिक इतिहास के स्वर्णिम युग के एक ऐसे महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में देखा जा सकता है, जिसने इस युग में हो रहे साम्राज्यों के विघटन, नए राष्ट्रों के जन्म और राजनीतिक विचारधाराओं की अभिव्यक्ति को इस प्रकार प्रभावित किया, जो आज भी हमारी दुनिया भर के देशों के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार दे रहा है।

यों तो राष्ट्रवाद का शाब्दिक अर्थ है अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम। यह अपने राष्ट्र की भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले लोगों में पायी जानेवाली सांस्कृतिक प्रेम एवं सामाजिक एकता की भावना है, जो किसी भी धर्म, जाति संप्रदाय या वर्ग विशेष की सीमाओं से परे है तथा राष्ट्रवाद को एक ऐसी विचारधारा के रूप में माना गया है, जो किसी राष्ट्र या राष्ट्र के प्रति वफादारी, समर्पण और निष्ठा पर जोर देती है और मानती है कि ऐसे दायित्व अन्य व्यक्तिगत या सामूहिक हितों से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

भारत में राष्ट्रवाद की भावना वैदिक काल से ही आस्तित्वमान है। इस बात की पुष्टि कई साक्ष्यों के माध्यम से की जा सकती है। अथर्ववेद के पृथ्वीसूक्त, विष्णुपुराण, वायुपुराण, महाभारत के भीष्म पर्व, गरुड़पुराण तथा रामायण में भारत माता अर्थात जन्मभूमि का यशोगान जिस अद्भुत रूप में किया गया है, वह प्राचीन भारत में राष्ट्रवाद के अस्तित्व को प्माणित करती है।

भारत में आधुनिक राष्ट्रवाद की उदय की परिघटना उपनिवेश विरोधी आंदोलन के साथ गहरे तौर पर जुड़ी हुई है। भारत में सामाजिक और सांस्कृतिक दमन, असमान रोजगार के अवसर, विदेशी पूंजीपतियों के प्रति पक्षपात सहित ब्रिटिश शासन का बर्चस्व, तथा विश्व की अन्य शक्तियों द्वारा शोषण की अनवरत प्रक्रिया का आरंभ, विकास एवं उसके चरम सीमा तक पहुंचने की प्रक्रिया ने सुषुप्त अवस्था में पड़ी हुई राष्ट्रीय चेतना रूपी ज्वालामुखी को जागृत करने का कार्य किया।

औपनिवेशिक शासको के खिलाफ संघर्ष ने राष्ट्र के लोगों में राष्ट्र के प्रति चेतना का संचार किया, जिससे लोग आपसी एकता की शक्ति को पहचानने लगे।

यों तो बिहार में भी राष्ट्रवाद का विकास प्राचीन समय से ही हो चुका था, जिसका प्रमाण हमें कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र में देखने को मिलता है, जिसमें कौटिल्य द्वारा एक राष्ट्रीय शासक की आवश्यकता महसूस की गई है। मैंने बिहार में राष्ट्रवाद के विकास के संदर्भ में यहाँ हुए विद्रोहों तथा आंदोलनों का विवरण इस शोध पत्र में प्रस्तुत किया है। बिहार में जिस प्रकार से खुदीराम बोस, प्रफुल्ल चाकी का कम उम्र में अदम्य साहस का प्रदर्शन तथा सात शहीदों द्वारा किया गया बलिदान राष्ट्रवाद की पराकाष्ठा का ज्वलंत उदाहरण है।

यहां के चंपारण आंदोलन में जनमानस की वास्तविक शक्ति के प्रदर्शन तथा उसकी सफलता ने पूरे राष्ट्र के सामने राष्ट्रवाद की एक नई तस्वीर प्रस्तुत की है, जिसने भारत के स्वतंत्रता संग्राम को नया मोड़ तथा एक मजबूत आधार प्रदान किया है। इन सभी राष्ट्रवादी महत्व की घटनाओं का वर्णन इस शोध पत्र में किया गया है।

आज की पीढ़ी को राष्ट्रवाद की शक्ति से परिचित कराना अत्यंत आवश्यक है, जिससे उनमें यह समझ विकसित हो सके कि राष्ट्र के विकास और सम्मान के लिए एकजुट होकर बिना किसी संप्रदाय विशेष या धर्म विशेष की हितों को महत्व दिए बिना केवल राष्ट्रीय हित को महत्व देने के कारण ही आज हमें स्वतंत्र भारत में भयरहित, विकसित एवं स्वतंत्र जीवन जीने का सौभाग्य प्राप्त है। इसकी स्वतंत्रता और विकसित भारत के स्वप्न को पूरा करने के लिए राष्ट्रवाद का निरंतर विकास अति आवश्यक है।

आज के आधुनिक समय में जब सभी राष्ट्रों के अंदर सांप्रदायिकता, धर्मान्धता फिर अपना सर उठा खड़ी है, ऐसे में यह शोध पत्र उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अपने विकास की चरम सीमा पर पहुंचे राष्ट्रवाद की शक्ति से आज के समय के विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों को परिचित कराने में अत्यंत प्रासंगिक तथा महत्वपूर्ण है।

कूटशब्द: राष्ट्रवाद, जनमानस, शोषण, विरोध, आंदोलन, सांप्रदायिकता, स्वतंत्रता

प्रस्तावना
भारतीय राष्ट्रवाद के उदय एवं विकास को आधुनिक इतिहास के स्वर्णिम युग के एक ऐसे महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में देखा जा सकता है, जिसने इस युग में हो रहे साम्राज्यों के विघटन, नए राष्ट्रों के जन्म और राजनीतिक विचारधाराओं की अभिव्यक्ति को इस प्रकार प्रभावित किया, जो आज भी हमारी दुनिया भर के देशों के राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक परिदृश्य को आकार दे रहा है।

यों तो राष्ट्रवाद का शाब्दिक अर्थ है अपने राष्ट्र के प्रति प्रेम। यह अपने राष्ट्र की भौगोलिक क्षेत्र में रहने वाले लोगों में पायी जानेवाली सांस्कृतिक प्रेम एवं सामाजिक एकता की भावना है, जो किसी भी धर्म, जाति संप्रदाय या वर्ग विशेष की सीमाओं से परे है तथा राष्ट्रवाद को एक ऐसी विचारधारा के रूप में माना गया है, जो किसी राष्ट्र या राष्ट्र के प्रति वफादारी, समर्पण और निष्ठा पर जोर देती है और मानती है कि ऐसे दायित्व अन्य व्यक्तिगत या सामूहिक हितों से अधिक महत्वपूर्ण होते हैं।

भारत में आधुनिक राष्ट्रवाद की उदय की परिघटना उपनिवेश विरोधी आंदोलन के साथ गहरे तौर पर जुड़ी हुई है। भारत में सामाजिक और सांस्कृतिक दमन, असमान रोजगार के अवसर, विदेशी पूंजीपतियों के प्रति पक्षपात सहित ब्रिटिश शासन का बर्चस्व, तथा विश्व की अन्य शक्तियों द्वारा शोषण की अनवरत प्रक्रिया का आरंभ, विकास एवं उसके चरम सीमा तक पहुंचने की प्रक्रिया ने सुषुप्त अवस्था में पड़ी हुई राष्ट्रीय चेतना रूपी ज्वालामुखी को जागृत करने का कार्य किया।

औपनिवेशिक शासको के खिलाफ संघर्ष ने राष्ट्र के लोगों में राष्ट्र के प्रति चेतना का संचार किया, जिससे लोग आपसी एकता की शक्ति को पहचानने लगे।

भारतीय राष्ट्रवाद की प्राचीनता

भारत में राष्ट्रवाद की अवधारणा प्राचीन काल से अस्तित्वमान है। अथर्ववेद के पृथ्वी सूक्त में धरती माता का माता का यशोगान करते हुए यह कहा गया है कि माता भूमि: पुत्रोऽहं पृथ्वीव्या: अर्थात (भूमि माता है और मैं पृथ्वी का पुत्र हूं)। विष्णुपुराण में राष्ट्र के प्रति श्रद्धाभाव का एक अलग ही रूप देखने को मिलता है, जिसमें भारत को 'पृथ्वी पर स्वर्ग' की संज्ञा दी गयी है।

अत्रापि भारतं श्रेष्ठं जम्बूद्वीपे महागने।
यतोहि कर्म भूरेषा ह्यतोऽन्या भोग भूमयः॥
गायन्ति देवा किल गीतकानि धन्यास्तु |
ते भारत - भूमे भवन्ति भूय: पुरूषा: सुरत्वात्॥

इसी प्रकार से वायुपुराण में भारत को अद्वितीय भुमि के रूप में बताया गया है।भागवतपुराण में भारतभूमि को पूरे विश्व की 'सबसे पवित्र भूमि' कहा गया है। भारत की भूमि को ऐसी पवित्र भूमि माना गया है, जिस पर देवता भी जन्म लेने की कामना करते हैं ताकि वे भी सत्कर्म करके वैकुण्ठधाम प्राप्त कर सके।

कदा वयं हि लिप्स्यामो जन्म भारत - भूतले।
कदा पुण्येन महता प्राप्यस्याम: परमं पदम्।

महाभारत के भीष्म पर्व में भारतवर्ष की महानता का गुणगान निम्नलिखित श्लोक के द्वारा किया गया है;

अत्र ते कीर्तिष्यामि वर्ष भारत भारतम्
प्रियमिन्द्रस्य देवस्य मनोवैवस्वतस्य।
अन्येषाम् च महाराजक्षत्रियारणाम् बलीयसाम्।|
सर्वेषामेव राजेन्द्र प्रियं भारत भारताम्॥

गरूड पुराण में राष्ट्रीय स्वतंत्रता प्राप्त करने की इच्छा को निम्नलिखित रूप में व्यक्त किया गया है -

स्वाधीन वृत्त: साफल्यं न पराधीवृत्तिता।
ये पराधीनकर्माणो जीवन्तोऽपि ते मृता: ॥

रामायण में रावण का वध करने के बाद श्री राम अपने छोटे भाई लक्ष्मण से यह कहते हैं;

अति स्वर्णमयी लक्खा न मे रोचते।
जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयसी।

हे लक्ष्मण यद्यपि यह लंका स्वर्णमयी है, तथापि मुझे इसमें रुचि नहीं है क्योंकि जननी और जन्मभूमि स्वर्ग से भी महान है।

भारतीय राष्ट्रवाद के उदय एवं विकास के कारण

भारतीय राष्ट्रवाद को शक्तिशाली बनाने हेतु भारत की धार्मिक एकता ने एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह किया। प्राचीन ग्रंथों जैसे वेद, रामायण, महाभारत, उपनिषद, गीता में दृष्टिगोचर हुई राष्ट्रवाद की भावना ने नागरिकों में एकता का सूत्रपात किया, जो राष्ट्रवाद के विकास की दिशा में महत्वपूर्ण कदम था। तीव्र परिवहन तथा संचार के साधन(एक प्रांत से दूसरे प्रांत तक फैले सड़को के जाल, 1900 ई तक 25000 मील लंबी रेलवे लाइनों का निर्माण, आधुनिक डाकघर तथा बिजली के तार) जिनका प्रयोग अंग्रेजों द्वारा अपने साम्राज्य के हितों की सुरक्षा के लिए किया गया। उसने भी राष्ट्रवाद के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन सभी साधनों ने देश को संगठित करने में सहायता प्रदान की, जिससे भारत में राजनीतिक जागरण की भावना का विकास हुआ हिंदू राष्ट्रवाद के विकास मैं एक महत्वपूर्ण कड़ी साबित हुई। इसके अतिरिक्त ऋषि - मुनियों तथा धर्म प्रचारकों द्वारा राष्ट्रवाद के विकास में महत्वपूर्ण सहयोग दिया गया। शंकराचार्य द्वारा कन्याकुमारी से हिमालय के श्रृंगो तक, चैतन्य द्वारा बंगाल से वृंदावन तक, रामानंद द्वारा दक्षिण से उत्तर भारत तक, कबीर, गुरु नानक, वल्लभाचार्य आदि संतो के द्वारा अपनी भक्ति की धारा से राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने में महत्ती भूमिका निभाई। इन सभी संतो ने भारत में कुरीतियों को दूर कर जागरूकता का वातावरण बनाया।

यही जागरूकता राष्ट्रीयता की दिशा में एक सार्थक कदम साबित हुई। राजनीतिक राष्ट्रवाद के विकास में अंग्रेजी शिक्षा ने भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अंग्रेजी शिक्षा ने भारतीयों को विचारों के आदान-प्रदान का एक मंच प्रदान किया। जिससे भारत में राजनीतिक जागरण की भावना विकसित हुई। भारतीय राष्ट्रवाद के विकास के चरण भारतीय राष्ट्रवाद के जटिल धागों की खोज हमें एक ऐसे ऐतिहासिक यात्रा पर ले जाती है, जिसमें उस सामाजिक ताने - बाने को उजागर किया जाता है, जिसने एक अखिल भारतीय राष्ट्र की नींव डाली। भारतीय राष्ट्रवाद के विकास के चरण की गाथा एक ऐसी समृद्ध कथा है, जिसने स्वतंत्रता के लिए तरस रहे राष्ट्र को आकृति प्रदान करने का कार्य किया। भारतीय राष्ट्रवाद के विकास को कई चरणों से होकर गुजरना पड़ा, जिन्हें हम निम्नलिखित चरणों के रूप में पाते हैं।

उदारवादी चरण (1850 से 1905): इस चरण में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई और राष्ट्रवाद में एक मजबूत आकार लिया। इस चरण में उदारता की भावना के साथ राष्ट्रवाद का विकास धीरे-धीरे हुआ।

उग्रवादी चरण (1906 - 1918): इस चरण में राष्ट्रवाद अधिक मजबूत रूप में विकसित हुआ तथा अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन ने उग्र रूप धारण कर लिया।

गांधीवादी चरण (1919 - 1947): इस चरण को गांधी युग की संज्ञा दी गई है। इस चरण में गांधी जी के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन, भारत छोड़ो आंदोलन जैसे आंदोलन हुए। इन आंदोलनों के द्वारा ब्रिटिश सरकार का इस प्रकार से विरोध किया गया तथा स्वतंत्रता की मांग की गई शकि उन्हें देश को स्वतंत्र करना पड़ा तथा साथ ही देश को छोड़कर जाना पड़ा।

क्रांतिकारी चरण: इस चरण में क्रांतिकारियों ने सशस्त्र विद्रोह किया। इस चरण में देश को स्वतंत्र कराने के लिए क्रांति को आवश्यक बताया गया। इन चरणों में भारतीय राष्ट्रवाद ने धीरे-धीरे अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया और अंततः भारत को स्वतंत्रता प्राप्त हुई।

बिहार में राष्ट्रवाद का विकास (1857 के पूर्व हुए विद्रोह)

बिहार भारतीय स्वतंत्रता की कीड़ाभूमि रहा है। युगों के अंतराल में मानव प्रतिभा यहाँ अभिनव रूपों में व्याप्त होती रही है।राष्ट्रीय संघर्ष के विभिन्न चरणों में इसने महत्वपूर्ण योगदान किया है। वस्तुतः चंपारण में ही महात्मा गांधी ने भारत के नवीन राष्ट्रवाद का पहला सफल प्रयोग किया था; यह नया राष्ट्रवाद सत्य और अहिंसा, मानवता एवं विश्व प्रेम पर बल देने के कारण विशिष्ट था। उत्पीड़ित मानवता के हेतु इसमें एक नया संदेश था। आजादी की लड़ाई का जब भी तूर्यनाद हुआ, बिहार ने अविलंब तथा पूरी निष्ठा के साथ उसमें भाग लिया।

भारत के प्रथम राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद जी ने बड़े ही अद्भुत शब्दों में बिहार के राष्ट्रवाद की गहन समीक्षा करते हुए अपनी बात कही है: "आज जिसे हम बिहार राज्य के नाम से अभिहित करते हैं उन क्षेत्रों का 1857 - 59 के विद्रोह के पूर्व तथा बाद के इन आंदोलनों में विशिष्ट हाथ रहा है। प्रारंभिक आंदोलनो को देश की स्वतंत्रता के लिए, विशुद्ध राजनीतिक आंदोलन कहना शायद पूर्णतया सही नहीं हो। अंशतः धार्मिक उद्देश्यों से भी उद्भूत तथा अनुप्रेरित थे। चाहे हम वहाबी आंदोलन पर, जो 1857 के बहुत पहले 1822 के लगभग शुरू हुआ था और किसी न किसी रूप में 1868 तक चलता रहा, इसका मुख्यालय पटना था। संथालो तथा मुण्डा कबीलाईयो के विद्रोहों पर विचार करें तो दोनों के पृष्ठफलक धार्मिक थे। 1857 से 59 के महान आंदोलन के विषय में भी अंततः ऐसा ही कहा जा सकता है। 1857 की विप्लव में बिहार के लोगों ने प्रमुख भाग लिया था। उसकी लपटें प्रांत भर में फैल गई थी, कुंवर सिंह के नेतृत्व में शाहाबाद उसका प्रमुखतम केंद्र था। जो भयानक नृशंसता और खू- रेजी करके सरकार उसका दमन कर सकी थी, आज भी उसकी याद बनी हुई है। कंपनी शासन समाप्त हुआ और भारत सीधे ब्रितानी ताज के अंतर्गत आ गया।अन्तर्भुक्ति तथा प्रसार की नीति का स्थान राजनैतिक सुधारो तथा विदेशी शासन के सभी प्रभावी विरोध की अभिव्यक्ति के साथ कठोरतापूर्वक व्यवहार करने की द्वैध नीति ने ले लिया। कालान्तर में राष्ट्रवाद की भस्मावृत्त चिंगारियां पुनः प्रज्वलित हो उठी तथा देश को आजाद करने हेतु एक व्यापक आंदोलन में रूपांतरित हो गई। 1947 में भारत स्वतंत्र हुआ। 1950 में भारतीय गणतंत्र का विशुद्ध उदय।

चाहे धार्मिक - राजनीतिक आंदोलन हो अथवा विशुद्ध संवैधानिक,उग्र क्रांतिकारी विस्फोट या फिर महात्मा गांधी के अनुप्रेरक नेतृत्व में सत्याग्रह, सभी में बिहार की महत्वपूर्ण देन रही है। हो सकता है कि महात्मा गांधी के सत्याग्रह का पहला प्रयोग बिहार के चंपारण में किया जाना मात्र एक संयोग ही हो किंतु उन्होंने जो किया, उनका सर्वाधिक महत्व है। हमारे स्वतंत्रता संग्राम के जिसका गाँधी जी के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का प्रमुख उपकरण बन गया था। विभिन्न चरणों में बिहार की जनता ने उपयुक्त हिस्सा लिया तथा उसकी अगली कतार में रही।उसमें उसका जो भाग रहा,उसका न केवल इस राज्य के लोग प्रत्युत्त दूसरे भी अध्ययन करके लाभान्वित हो सकते हैं।"

बिहार में राष्ट्रवाद 18 वीं सदी के उत्तरार्ध में अपने विकास के चरण की ओर अग्रसर था। 1757 से 1857 तक यहां का स्थानीय जमींदारो, क्षेत्रीय शासकों,युवकों को एवं विभिन्न जनजातियों तथा कृषक वर्ग अंग्रेजों के खिलाफ अनेकों बार संघर्ष यह विद्रोह किया। बिहार के स्थानीय लोगों द्वारा अंग्रेजों के खिलाफ संगठित या संगठित रूप से विद्रोह चला रहा फलस्वरुप बिहार में कई विद्रोह हुए। जिन्हें हम निम्नवत् देख सकते हैं;

सन्यासी विद्रोह

आनंद मठ के अनुसार सन्यासी विद्रोह 1763 में शुरू हुआ और 1820ई तक चला। यह विस्थापित किसान और धार्मिक भिक्षुओं के नेतृत्व में विस्थापित सैनिकों का विद्रोह था। बिहार में पूर्णिया 1770 से 1771 में सन्यासी विद्रोह का केंद्र था।

नोनिया विद्रोह: इस विद्रोह का प्रमुख क्षेत्र बिहार में शोरा उत्पादन क्षेत्र हाजीपुर, तिरहुत, सारण और पूर्णिया में था।शोरे का उपयोग बारूद बनाने के लिए किया जाता था। इसे इकट्ठा करने और तैयार करने का काम नोनिया जाति के लोग करते थे। इन लोगों ने शोरे की चोरी एवं गुप्त रूप से व्यापार करना शुरू कर दिया जिसके कारण इन्हें अंग्रेजी क्रूरता का शिकार होना पड़ा। इसी कारण अंग्रेजी राज्य के विरोध किया गया।

तमाड़ विद्रोह: 1789 से 1794 ई तक हुआ यह विद्रोह आदिवासियों द्वारा चलाया गया था। छोटानागपुर के उरांव जनजाति द्वारा जमींदारो के खिलाफ यह विद्रोह शुरू किया गया।

पहाड़िया विद्रोह: यह विद्रोह 1795 से 1860 ई के मध्य तक चलता रहा यह विद्रोह राजमहल के पहाड़ियों में स्थित जनजातियों द्वारा किया गया था।

चुआड़ विद्रोह

1766 से 1834 ई के बीच किसान आंदोलन की एक श्रृंखला थी। जो नागपुर और धालभूम, मिदनापुर, विष्णुपुर और मान-सम्मान के जंगल के बस्तियों के आस-पास के ग्रामीण इलाकों के आदिवासी निवासियों द्वारा किया गया था, जिसका मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश शासन की नीतियों का विरोध करना था।

वहाबी आंदोलन

यह आंदोलन 1820 से 1870 ई के मध्य भारत के उत्तर पश्चिमी पूर्वी तथा मध्य भाग में शुरू हुआ था बिहार में यह 1857 ई तक सक्रिय रहा और 1863 ईस्वी में इसका पूर्णता दमन हो गया। वहाबी आंदोलन एक सुधारवादी इस्लामी आंदोलन था जिसका स्वरूप सांप्रदायिक था परंतु। हिन्दुओं ने कभी इसका विरोध नहीं किया। 1865 ईस्वी में अनेक वहाबियों को सक्रिय आंदोलन भाग लेने का आरोप लगाकर, अंग्रेजों ने जेल में डाल दिया। लोटा विद्रोह - यह विद्रोह 1856 में मुजफ्फरपुर जिले में स्थित कैदियों ने किया। यह विद्रोह पीतल के लोटे के बदले कैदियों को मिट्टी के बर्तन दिए जाने के कड़े विरोध के रूप में हुआ।

इस प्रकार 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध तक बिहार में अनेक छोटे-बड़े जनजातीय विद्रोह जैसे हो विद्रोह (1820 ई में सिंहभूम के हो जनजातियों का विद्रोह), कोल विद्रोह (1829 -1839 के बीच रांची, सिंहभूम, हजारीबाग, तथा मानभूमि के आदिवासियों का विद्रोह),भूमिज विद्रोह(1832 ई में किसान और साहूकार द्वारा किया गया विद्रोह), चेर विद्रोह (1800 ई मे चेर और अंग्रेजो के बीच का विद्रोह), ताना भगत विद्रोह (1814 में छोटा नागपुर के गुमला जिला में आदिवासियों द्वारा किया गया विद्रोह), सफाडोह आंदोलन (1870 में ब्रिटिश शासन से संघर्ष के लिए आलंबन एवं चरित्र निर्माण के लिए धार्मिक भावना को प्रज्वलित करने के लिए किया गया आंदोलन)सरदारी आंदोलन (1860 ईस्वी में मुंडा एवं उरांव जनजातियों द्वारा जमींदारों के शोषण एवं पुलिस के अत्याचार का विरोध करने के लिए संवैधानिक संघर्ष)संथाल विद्रोह (1855 - 56 मे भागलपुर से राजमहल तक फैला था।सिद्धु- कान्ह का नेतृत्व) खरवार विद्रोह (भू- राजस्व बंदोबस्त व्यवस्था के विरोध मे किया गया विद्रोह), मुंडा विद्रोह (1895 मे बिरसा मुंडा के नेतृत्व में सबसे संगठित तथा विस्तृत विद्रोह) सक्रिय रहे, जिन्होंने राष्ट्रवाद के विकास के मार्ग को प्रशस्त किया।

सन 1857 के आंदोलन में बिहार की भूमिका

1857 का विद्रोह अपने औपनिवेशिक सत्ता के विरूद्ध स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष के दौरान पहला बड़ा विद्रोह था। इस संग्राम में बिहार का नेतृत्व बाबू कुंवर सिंह ने किया था। इस समय उनकी आयु 80 वर्ष की थी। इस अवस्था में उन्होंने 1857 को दानापुर में पदस्थापित सिपाहियों की कमान संभाली। इस संघर्ष में जगदीशपुर के इस महान नेता ने वीरगति को प्राप्त किया। परंतु उनके अनुयायी विचलित नहीं हुए एवं उनके भाई अमर सिंह तथा हरकिशन सिंह के नेतृत्व में डटे रहे। वस्तुतःजगदीशपुर में अमर सिंह के नेतृत्व में एक सरकार की स्थापना हुई।

पटना के पीर अली खान जो कि पेशे से एक बुक बाइन्डर थे। उन्होंने 1857के विद्रोह में महत्वपूर्ण सहयोग दिया था।

स्वदेशी आंदोलन में बिहार की भूमिका

1905 में हुए बंगाल विभाजन के विरूद्ध स्वदेशी आंदोलन में बिहार के नवयुवकों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। 1908 में खुदीराम बोस तथा प्रफुल्ल चाकी, द्वारा अंग्रेज जज किंग्सफोर्ड की हत्या का प्रयास इसका ज्वलंत उदाहरण है।

चंपारण सत्याग्रह का भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में योगदान

चंपारण एक आम जनमानस के शोषण की कहानी है,जो एक पूरे वर्ग की शोषण की सच्ची दास्तान को बयां करता है। यह सत्याग्रह गांधी जी का देश में पहला सत्याग्रह था जिसने देश में उनकी ऐसी पहचान बनाई जो हमेशा के लिए अंकित हो गई। चंपारण के बाद गांधी जी पूरे देश के गांधी हो गए। इस विद्रोह में 19 लाख से अधिक किसानों के दुखों का अंत हुआ। 4 मार्च 1918 को कानून बना और चंपारण की तीन कट्ठिया प्रथा पूरी तरह से समाप्त हो गई।

असहयोग आंदोलन द्वारा अपनी छाप छोड़ना

असहयोग आंदोलन में बिहार ने अहम भूमिका निभाई। इस आंदोलन में बिहार के कोई नेताओं जैसे डॉ राजेंद्र प्रसाद, स्वामी विद्यानंद, राहुल सांकृत्यायन, मजहर उल हक, अलग जगह पर अलग-अलग तरह से अपना योगदान दिया।

सविनय अवज्ञा आंदोलन द्वारा बिहार का भारतीय राष्ट्रवाद में सहयोग देना- सविनय अवज्ञा आंदोलन में बिहार में नमक सत्याग्रह संभव नहीं था। यहां नमक नहीं बनाया जा सकता था। अतः लोगों ने चौकीदारी कर का भुगतान करने से मना कर इस आंदोलन में अपनी भागीदारी सुनिश्चित की। बिहार में महिलाओं ने चरखा अभियान में भाग लिया।

भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार की भूमिका

भारत छोड़ो आंदोलन में बिहार का योगदान बहुत अहम रहा। किसानों, मजदूर और छात्रों के आंदोलन ने भारत में भारत छोड़ो आंदोलन की पृष्ठभूमि तैयार की थी। इस आंदोलन में बिहार के सात छात्र 11 अगस्त 1942 को पटना सचिवालय पर तिरंगा फहराने के दौरान शहीद हो गए। उमाकांत सिन्हा (सारण), रामानंद सिंह (पटना), सतीश प्रसाद झा (भागलपुर), जगपति कुमार (गया), देवी प्रसाद चौधरी (जमालपुर), राजेंद्र सिंह (सारण), राम गोविंद सिंह (सारण)।
इनके बलिदान को भारत की स्वतंत्रता कभी नहीं भूल सकती।

बिहार की महिलाओं का भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में सहयोग

भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में बिहार की महिलाओं ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।उन्होंने असहयोग आंदोलन, सविनय अवज्ञा आंदोलन और भारत छोड़ो आंदोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। बिहार की महिलाओं ने विदेशी कपड़ो,तथा शराब की दुकानों के सामने धरना प्रदर्शन किया था और वे इस कार्य में जेल जाने तक से पीछे नहीं हटी। बिहार की कुछ महिलाएं जैसे प्रभावती देवी, तारा रानी श्रीवास्तव, चंद्रावती देवी, रामप्यारी देवी,सरस्वती देवी, भगवती देवी ऐसी बहुत सी महिलाएं हैं, जिन्होंने पुरुषों के साथ कंधे से कंधे मिलाकर स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ी थी। हम उन महिलाओं की भागीदारी को भी कम महत्वपूर्ण नहीं आक सकते जिन्होंने अपने पति को पारिवारिक दायित्वों से मुक्त करके आजादी की लड़ाई लड़ने के लिए प्रेरित किया।

संविधान निर्माण में बिहार की भूमिका

भारत के संविधान निर्माण में 36 बिहारियों की अहम भूमिका रही है, जिसमें कि दरभंगा के महाराज कामेश्वर सिंह का भी योगदान रहा है। संविधान निर्मात्री सभा में डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद, डॉक्टर सच्चिदानंद सिन्हा भी थे।

दिनकर जी ने संस्कृति के चार अध्याय में यह लिखा है कि "भारत की एकता और भारत की स्वतंत्रता एक ही तस्वीर के दो पहलू हैं। यदि एकता खिड़की होकर चली गई तो स्वतंत्रता सदर दरवाजा खोल कर भाग जाएगी। इसलिए हमें अपनी राष्ट्रीय एकता की रक्षा करनी है। एकता की रक्षा के लिए यदि हमें अपमान सहना पड़े तो उसे सह लेना चाहिए। एकता की रक्षा के लिए यदि हमें अन्याय को सहना पड़े तो हम अन्याय को भी सह लेंगे। हमें यह याद रखना है कि हम गरीब हैं और गरीबों के पारिवारिक झगड़े कुरूप हुआ करते हैं जब हमारी गरीबी दूर हो जाएगी। हमारे झगड़े भी खत्म हो जाएंगे अथवा वे अगर बन रहे तब भी उनमें आज सी कटुता नहीं होगी।
सुस्थिर क्षणों में बिहार वासियों को अपने अतीत की महिमा का ध्यान कर लेना चाहिए और ऐसी स्थिति में यह और आवश्यक है कि जबकि बिहार से बाहर बिहार को अनेक प्रकार से अपमानित और लांछित करने की कोशिश हो रही है, बिहार अतीत में भी प्रेरणा का केंद्र रहा है और आज भी उसकी प्रेरणा भूमि उर्वर है। "
आज के आधुनिक समय में जब सभी राष्ट्रों के अंदर सांप्रदायिकता, धर्मान्धता फिर अपना सर उठा खड़ी है, ऐसे में यह शोध पत्र उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध तथा बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अपने विकास की चरम सीमा पर पहुंचे राष्ट्रवाद की शक्ति से आज के समय के विद्यार्थियों तथा शोधार्थियों को परिचित कराने में अत्यंत प्रासंगिक तथा महत्वपूर्ण है।

निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है की बिहार की राजनीतिक और सांस्कृतिक उपलब्धि सनातन है इसने राजतंत्र, गणतंत्र,जैन धर्म और बौद्ध धर्म को उद्भुत कर समस्त भारतवर्ष को एक झंडे के नीचे एकत्र करने का प्रयास किया है ।सम्राट अशोक की भूमि बिहार जहां से गांधी जी ने भारत में अपने सत्याग्रह का पहला प्रयोग किया था। अंग्रेजों के भारत छोड़ने हेतु क्रांतिकारी आंदोलन में बिहार वासियों ने अग्रणी भूमिका निभाकर भारतीय राष्ट्रवाद के उत्थान एवं विकास में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई,जो आज के समय में भी प्रासंगिक है।

संदर्भ

1. चंद्र विपिन भारत का स्वतंत्रता संघर्ष हिंदी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, पृष्ठ संख्या - 54 - 63
2. दत्त डॉक्टर के. के., बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, भाग - 3, पृष्ठ संख्या 4,5,7,8
3. दत्त डॉक्टर के. के., बिहार में स्वतंत्रता आंदोलन का इतिहास, पृष्ठ संख्या - 10, 11,55,56,57
4. दत्त पाम रजनी, आज का भारत, नई दिल्ली,1985, 341
5. राय विजय कुमार, बिहार एक अवलोकन, विवास पॅनोरमा प्रकाशन, दिल्ली
6. ग्रोवर बी. एल., यशपाल, आधुनिक भारत का इतिहास, एक नवीन मूल्यांकन एस चंद कम्पनी लिमिटेड, नई दिल्ली
7. अहमद इम्तियाज, अहसन कमर, बिहार एक परिचय, नेशनल पब्लिकेशन्स, पटना
8. डॉ राधाकृष्ण शर्मा बिहार का इतिहास (प्रारंभ से 1947 ई तक) पृष्ठ संख्या - 2, 3,4
9. दिनकर रामधारी सिंह, संस्कृति के चार अध्याय, लोक भारती प्रकाशन
10. प्रसाद रमेश, बिहार इतिहास कला एवं संस्कृति, पार्वती प्रकाशन, पटना